॥ सारस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "पर्यावरणीय सङ्कट के समाधान में महाकवि कालिदास की दृष्टि–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Sanskrit and Prakrit Language** under School of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022-23.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Vinod Kumar Gupta and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Manju Jaiswal
En. No.- 2101002

Research Supervisor:-

Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

Prof. Satyapal Tiwari
Director of School of Humanities

01.08.23

Prof. P. K. Pandey
Director, R&D Cell

"पर्यावरणीय सङ्कट के समाधान में महाकवि कालिदास की दृष्टि–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN SANSKRIT AND PRAKRIT LANGUAGE
to
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by
Manju Jaiswal
En. No.- 2101002

Under the Supervision of
Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Manju Jaiswal

ABSTRACT :-

हमारा शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश । ये सम्पूर्ण तत्व हमें प्रकृति से प्राप्त होते हैं, जो मानव जीवन की सुरक्षा को निश्चित करते हैं । किन्तु आधुनिक युग में इस प्राकृतिक पर्यावरण की ही सुरक्षा खतरे में पड़ चुकी है । आज सम्पूर्ण विश्व किसी न किसी प्रकार से पर्यावरणीय संङ्कट से ग्रस्त है । भौतिक विकास के दृष्टिगत आज का मनुष्य अविवेकशील ढंग प्रकृति का दोहन कर रहा है, प्रकृति एवं मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियायें प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है जो आने वाले समय में विनाश का कारण बनेगी । पर्यावरणीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, संस्कृत–वाङ्मय के विविध ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए तथा शोध के द्वारा **"पर्यावरणीय सङ्कट के समाधान में महाकवि कालिदास की दृष्टि– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"** विषय पर सात अध्यायों में अध्ययन किया जायेगा । शोध के माध्यम से प्राकृतिक संङ्कट को दूर करने का प्रयास तथा विविध उपायों के द्वारा पर्यावरण को स्वच्छ तथा जीवन को स्वस्थ बनाना ही शोध–कार्य का सम्पूर्ण लक्ष्य है ।

Key words :- *प्राकृतिक, पर्यावरण–सङ्कट, अप्रत्यक्ष, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, संस्कृत–वाङ्मय ।*

Manju Jaiswal

1. Introduction :-

पर्यावरणीय सङ्कट के समाधान में महाकवि कालिदास की दृष्टि-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पर्यावरण की समस्या आधुनिक युग के ज्वलन्त विषयों में से एक है। सम्पूर्ण विश्व आज किसी न किसी प्रकार पर्यावरणीय सङ्कट से ग्रस्त है। भौतिक विकास के दृष्टिगत आज का मनुष्य अविवेकशील ढंग से प्रकृति का दोहन कर रहा है, जो कि आगे आने वाले समय में इसके भयानक एवं विकराल रूप के द्वारा सृष्टि के विनाश का कारण बनेगा। पर्यावरण शब्द **'परि'** उपसर्ग तथा **'आवरण'** शब्द से मिलकर बना है 'परि' का अर्थ है चारो ओर से तथा 'आवरण' का अर्थ है घिरा हुआ। अतः पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ हुआ हमारे चारों ओर का वातावरण। पर्यावरण को सभी प्रकार के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार से यह दो रूपों में विभाजित किया गया है– 1. जैविक तथा 2. अजैविक जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर सभी जीव–जन्तु, पेड़–पौधों तथा उनसे जुड़ी सारी जैव प्रक्रियाएँ शामिल हैं। जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटकों में – जलवायु, पर्वत, चट्टान, नदी तथा समुद्र इत्यादि तत्वों को समावेश होता है। यह हमारे चारो ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती है। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियायें पर्यावरण को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अतः जीव और पर्यावरण एक दूसरे पर आश्रित है।

पर्यावरण के असन्तुलन से विविध प्राकृतिक आपदायें जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण तथा अन्य पर्यावरणीय समस्यायें उत्पन्न होती हैं। जिसके अन्तर्गत चक्रवात, तेज तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी का फटना, सुनामी, अत्यधिक बारिश, बादलों का फटना तथा सूखा आदि शामिल हैं। उदाहरण स्वरूप 26 दिसम्बर सन् 2004 में हिन्दमहासागर में भूकम्प के कारण आयी सुनामी, 16 जून सन् 2013 में उत्तराखण्ड के रूद्र प्रयाग जिले के केदारनाथ धाम में चौराबाड़ी ग्लेशियर पिघलने से विनाशकारी महाप्रलय, सन् 2019 में वैश्विक स्तर पर कोरोना वायरस के संक्रमण से वृहद् रूप में जन–धन की हानि हुई। पर्यावरण के सन्तुलन बिगड़ने से ; मात्र मनुष्य ही नहीं, अपितु

Manju Jaiswal

सम्पूर्ण जीव–जगत् का अस्तित्व खतरे में है। पर्यावरण का सन्तुलन बना रहे, इसके लिये पर्यावरण की उपयोगिता एवं महत्त्व की जानकारी देना तथा उसका अनुसरण करना हम सभी का परम कर्तव्य है। अतः पर्यावरणीय चिन्तन ही वर्तमान समस्या का निवारण है।

प्राचीन महर्षियों के द्वारा व्याख्यात, विश्लेषित एवं विस्तारित भारत की प्राणभूत देववाणी ही विश्व में 'संस्कृत' के नाम से प्रसिद्ध है। गङ्गा के समान जिसकी अमृतधारा अनेक युगों से निरन्तर प्रवाहित हो रही है। ब्रह्माण्ड में जिस प्रकार अनेक सौर–मण्डल, उनके ग्रह तथा नक्षत्र सर्वदा सक्रिय होकर रात्रि–दिवस तथा विविध ऋतुओं को नियन्त्रित एवं परिवर्तित करते हैं तथा सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करते हैं, उसी प्रकार से इस पृथ्वी की पवित्र भारत भूमि में संस्कृत–वाङ्मय के विपुल राशिभूत अनेक पवित्र ग्रन्थ वैदिक काल से ही सक्रिय होकर पृथ्वी के चारों दिशाओं में अपनी प्रखर किरणें फैला रहे हैं तथा ज्ञान–विज्ञान में निरन्तर वृद्धि और विकास कर रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता हमारे संस्कृत वाङ्.मय में अन्तर्निहित ज्ञान–विज्ञान के स्रोतों के लिए अत्यन्त ऋणी है। प्राचीन काल से ही संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता के अन्वेषण हेतु प्रसिद्ध विद्वानों का भारत की भूमि में आवागमन होता रहा है। आज भी विविध देशों के द्वारा हमारे भारत के श्रेष्ठ विद्वानों को संस्कृत के प्रचार–प्रसार के लिए आतिथ्य प्रदान किया जाता है। सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्.मय का, चाहे वह वैदिक हो अथवा लौकिक, प्रकृति एवं पर्यावरण के सन्तुलन एवं संरक्षण में विशेष योगदान रहा है। अपौरुषेय कहे जाने वाले चतुर्वेदों में तो पर्यावरण के लिये उत्तरदायी समस्त ब्रह्माण्ड का ही वर्णन प्राप्त होता है, जैसे – द्यौ, वरुण, मित्र, सूर्य, सवितृ, पूषन्, आदित्यगण, मरुद्गण, वायु, पर्जन्य, आपः, पृथ्वी, अग्नि, सोम, चन्द्रमा, नक्षत्र तथा वनस्पतियाँ एवं चराचर जगत् के उपयोगी पशु–पक्षियों को महर्षियों ने किसी न किसी दैवी उपाधि से विभूषित किया है, जिससे लोगों के मन मस्तिष्क में इनके प्रति आस्था बनी रहे और पर्यावरण के प्रति उनके उत्तरदायित्व की पूर्ति होती रहे।

वैदिक संस्कृत का दर्शन हमें चारो वेद, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषदादि ग्रन्थों में प्राप्त होता है तथा लौकिक संस्कृत – पुराण, महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य, रूपक, नीति कथाओं आदि के अतिरिक्त विविध शास्त्रों जैसे व्याकरण दर्शन, ज्योतिष आदि विपुल ग्रन्थ राशि के रूप में प्राचीन काल से आज तक सुरक्षित हैं तथा आज भी इसमें श्रेष्ठ रचनायें अनवरत रूप से हो रही हैं। संस्कृत के महाकवियों में प्रकृति के सुकुमार कवि

Manju Jaiswal

कहे जाने वाले महाकवि कालिदास का नाम अत्यन्त आदर से लिया जाता है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ पश्चाद्वर्ती कवियों के लिए प्रेरणास्रोत है। महाकवि के द्वारा रचित ग्रन्थों में –

दो महाकाव्य – रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्।

दो खण्डकाव्य – ऋतुसंहारम्, मेघदूतम् तथा

तीन नाट्यग्रन्थ – अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम् है।

इन सभी ग्रन्थों में महाकवि के द्वारा प्रकृति चित्रण में जो सुकुमारता तथा सहृदयता दिखलायी पड़ती है, वह अत्यन्त दुर्लभ है।

प्रकृति प्रेम के द्वारा पर्यावरण की शुद्धता का पाठ पढ़ाने वाले हमारे संस्कृत वाङ्. मय के महान कवियों ने प्राचीनकाल से ही इसकी आवश्यकता का अनुभव किया था। इसीलिए आज भी उनकी रचनाओं में इसकी प्रासंगिकता विद्यमान है।

कालिदास के सम्पूर्ण ग्रन्थों में प्राकृतिक सुषमा दर्शनीय है। पशु–पक्षियों, तालाबों, पर्वत–कन्दराओं ग्रह–नक्षत्रों, सूर्योदय–सूर्यास्त, चन्द्रादि का सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किया गया है। कुमारसम्भवम् में तो कैलाश पर्वत का जिस प्रकार वर्णन प्राप्त है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उपरोक्त दृश्यों का अमूर्त में मूर्त चित्रण करके मानो उन्होंने पर्यावरण के प्रति अपनी संवेदनशीलता को प्रकट करने का प्रयास किया है तथा पर्यावरण सुरक्षा के प्रति सजग रहने का सन्देश दिया है।

2. Literature Review :-

शोधार्थिनी ने विभिन्न अन्तर्जालीय स्रोतों के माध्यम से पूर्व में हुए शोध कार्यों का सर्वेक्षण किया, जहाँ प्रस्तावित शोध कार्य से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधकार्य प्राप्त हुए–

- ❖ कालिदास की कृतियों में पर्यावरण चेतना, अरविन्द कुमार पाण्डेय, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ 2004।
- ❖ कालिदास की कृतियों में पर्यावरण विज्ञान–एक अध्ययन, किरन चन्देल, वी0बी0एस0 पूर्वांचल विश्वविद्यालय 2002।
- ❖ कालिदास के काव्यों में पर्यावरण एवं संरक्षण, चन्द्रशेखर मौर्य।
- ❖ कालिदासकृतीनां पर्यावरणदृष्टि विशिष्टामाध्ययनम्, दुर्गाप्रसाद ओमनाथ शर्मा।

Manju Jaiswal

3. Description Broad Area :-

वर्तमान समय में पर्यावरणीय समस्त उपादानों में क्षरण होता है। मानव विकास के साथ–साथ विनाश की ओर भी अग्रेसर है, जबकि विनाश रहित विकास सराहनीय है और समस्त मानवता के हित में है। आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण के सङ्कट से जूझ रहा है, जो आने वाले समय के लिए अत्यन्त ही विनाशकारी है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत साहित्य में इस ओर पर्याप्त चिन्तन किया गया है, जिसमें महाकवि कालिदास का उल्लेखनीय योगदान है। कालिदास संस्कृत साहित्य में निहित प्रकृति के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके काव्यों में दृश्यमान प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के विविध उपाय वर्तमान पर्यावरणीय सङ्कट को दूर करने में पूर्णतः समर्थ प्रतीत होते हैं। अतः उनके द्वारा किये गये पर्यावरणीय चिन्तन एवं सङ्कट के समाधान का प्रकाशन प्रस्तुत विषय पर शोध–कार्य का औचित्य है।

प्रस्तावित अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय :	संस्कृत वाङ्मय् में पर्यावरण
द्वितीय अध्याय :	महाकवि कालिदास का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व
तृतीय अध्याय :	वर्तमान पर्यावरणीय सङ्कट
चतुर्थ अध्याय :	महाकवि कालिदास के नाट्यग्रन्थों में पर्यावरणीय सङ्कट का समाधान
पंचम अध्याय :	महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में पर्यावरणीय सङ्कट का समाधान
षष्ठ अध्याय :	महाकवि कालिदास के गीतिकाव्यों में पर्यावरणीय संङ्कट का समाधान

Manju Jaiswal

सप्तम अध्याय : वर्तमान समय में पर्यावरणीय संरक्षण में महाकवि कालिदास का योगदान

उपसंहार

4 . Objectives of the Study :-

प्रत्येक कार्य प्रयोजन से युक्त होता है। मेरा यह शोध कार्य भी उद्‌देश्यपूर्ण है। महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में प्रतिच्छवित पर्यावरणीय तथ्यों को उद्घाटित करना, तथा उनके द्वारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण सङ्कट समाधान हेतु योगदान, शोध का मुख्य उद्‌देश्य है।

5. Research Methodology :-

प्रस्तुत शोध कार्य में सामग्री संकलन हेतु मूलभूत ग्रन्थों, पुस्तकालयों पत्र-पत्रिकाओं, आनलाइन एवं आफलाइन समग्रियों की सहायता ली जायेगी, तथा मूलभूत पुस्तकों के लेखन कार्य से सम्बन्धित संस्कृत विद्वानों से सम्पर्क कर शोध सामग्री संकलित की जायेगी। इसके अतिरिक्त आधुनिक सम्प्रेषण की तकनीक के साथ–साथ मौलिक ग्रन्थों के टीकाओं, व्याख्याओं के अध्ययन हेतु विवेचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध–प्रविधि के माध्यम से शोध कार्य किया जायेगा।

6. Expected Outcome of the Research :-

यदि प्राकृतिक सुरक्षा के नियमों का समुचित पालन किया जाये, तो पर्यावरण के सङ्कट से सम्पूर्ण विश्व को बचाया जा सकता है।

Manju Jaiswal

Reference

क्र0 सं0	ग्रन्थ का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन तथा सन्
1.	संस्कृत वाङ्.मय का वृहद् इतिहास	आचार्य बलदेव उपाध्याय	उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ 1996
2.	संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	डॉ0 कपिल देव द्विवेदी	रामनारायण लाल, विजय कुमार, 2004
3.	संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	डॉ0 राधा वल्लभ त्रिपाठी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी, प्रथम संस्करण 2001
4.	कालिदास साहित्यम्	डॉ0 आद्या प्रसाद मिश्र	अक्षयवट प्रकाशन, 1994 इलाहाबाद (26 बलरामपुर हाउस)
5.	मेघदूत एक विश्लेषण	डॉ0 देवी दत्त शर्मा	देववाणी परिषद्, दिल्ली 1981
6.	मेघदूत	डॉ0 एस0 के0 डे0	साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली 1916
7.	संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डॉ0 राम जी उपाध्याय	नव साहित्य प्रेस, 1961
8.	आधुनिक संस्कृत साहित्य	डॉ0 हीरा लाल शुक्ल	रचना प्रकाशन, इलाहाबाद 1961
9.	मालविकाग्निमित्र (कालिदास)	हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला – 216 टीका आचार्य रामचन्द्र मिश्र	चौखम्भा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस 1951
10.	विक्रमोर्वशीयम्	सुरेन्द्रनाथ शास्त्री	प्रथम संस्करण, 1942
11.	रघुवंशम्	चारूदत्त शास्त्री	1961
12.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डॉ0 नव किशोर शास्त्री	पंचम संस्करण, 1964

Manju Jaiswal

13.	कुमारसम्भवम्	प्रद्युम्न नाथ पाण्डेय	चौखम्भा संस्करण, 2013
14.	मेघदूतम्	डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी	विश्वविद्यालय प्रकशन, संस्करण वाराणसी 2005
15.	मालविकाग्निमित्रम्	एम0आर0 काले	तृतीय संस्करण 1967
16.	संस्कृत नाटकों में समाज चित्रण	डॉ0 चित्रशर्मा	भारत–भारती प्रकाशन, दरियागंज
17.	कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन संस्कृति	डॉ0 गायत्री वर्मा	हिन्दी प्रकाशन, पुस्तकालय, वाराणसी

Manju Jaiswal

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Manju Jaiswal
Title	Paryavarneey Sankat ke Samadhan....
Paper/Submission ID	4095534
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-15 14:54:33
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Manju Jaiswal

DrillBit

t Similarity Report

0	0	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

ION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE

Manju Jaiswal